

दादियों के श्रीमुख से ..

सतोगुणी एवं गुणग्राही बुद्धि हो

प्रश्न - काफी वर्षों से ज्ञान में

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका चल रहे हैं लेकिन कुछ कमियां ऐसी हैं जो पुरुषार्थ करने के बावजूद भी जाती नहीं हैं तो दिलशिकस्त हो जाते हैं, उन्नति महसूस नहीं होती है, क्या करें ?

दादी जानकी - जब हम किसी से अपनी तुलना करते हैं तो दिलशिकस्त हो जाते हैं। फिर बाबा हर मुरली में जवाब देता है कि बच्ची तुम जो हो, जैसी हो मेरी हो फिर भी हमको खुशी नहीं होती है। इसका कारण है कि बाबा को जो अच्छा नहीं लगता है, वह नहीं करने की प्रतिज्ञा नहीं लेते हैं। अगर लेते भी हैं तो भूल जाते हैं। बाबा की एक-एक बात शक्तिशाली है, उसको अगर हम अंदर से दोहराएँ तो कमजोरियां खत्म हो जाएंगी। हम कमजोरियों को नहीं दोहराएँ। स्व को चेंज करने के लिए पावरफुल याद चाहिए, इसका पुरुषार्थ जरूर हो। मुझे चेंज होना है - यह लक्ष्य हो। दूसरा चेंज हो यह हम नहीं सोचें। कोई समय था जो हमारी दिल कोमल थी, किसका सुन नहीं सकते थे। अब कोमल दिल नहीं है, अब सुनकर समा सकते हैं। अच्छी बात ले लेते हैं। जो बात मेरे को दुःख देती है, या मेरे द्वारा औरों को दुःख मिलता है तो वह मुझे चेंज करना है। उसके लिए शक्तिशाली याद करनी पड़ती है। हम तो राय देती कि और सब बातों को छोड़, खाना भी न खाकर, कमजोरी है तो उसे पहले शक्तिशाली याद से खत्म कर फिर बाहर आओ। गुफा में चले जाओ। अपने ऊपर अच्छी तरह से अटेन्शन देकर के अपनी कमजोरियों को खत्म कर सकते हैं। कमजोरी को खत्म करने के लिए अंदर से

व्रत रखो। दिल से सच्चा पुरुषार्थ करो। बाबा ने वायदा किया है कि तुम योग लगाओ मैं विकर्म विनाश करूंगा। परन्तु होता क्या है? जिस घड़ी वैराग्य आता है तो पुरुषार्थ अच्छा चलता है फिर ठण्डा हो जाता है, तो अलबेलापन आता है फिर सुस्ती आती है फिर जैसे के वैसे हो जाते हैं।

इसके लिए क्या करें, जो ऐसा न हो? एक तो सतोगुणी बुद्धि हो, दूसरा गुणग्राही हो। हंस जैसी बुद्धि हो जो सदा ही मोती चुगते रहें। जो काम की बात है वह ले लो, बाकी छोड़ दो। भूल करके भी भूल का वर्णन, चिन्तन मत करो, अभूल बनने का पुरुषार्थ करो। अब मेरे से कोई भूल न हो। कभी किसी देहधारी का सहारा पकड़ने का ख्याल भी न आये। अकेली भली रहूँ तो बाबा मेरे ऊपर नजर रखेगा। देहधारी की तरफ ध्यान गया तो बाबा भाग जायेगा फिर बाबा को ढूँढते रहेंगे। तो कम से कम इतनी मेहनत तो करूँ जो मेरी याद अव्यभिचारी हो। पुराना पाप का खाता खत्म करूँ, यह देहधारी के तरफ का झुकाव जो है वो अंदर बहुत दुःखी करता है। अपने लिए दुःख क्यों क्रियेट करूँ? थोड़ी सहनशीलता रखो, थोड़ी शान्ति रखो, थोड़ा संतुष्ट रहना सीखो तो बाबा साथ देता है। इन गुणों को अच्छी तरह से धारण करो। अगर धारणा नहीं होती है तो सच्चाई की कमी है। देह-अभिमान के कारण ही कोई ना कोई कमजोरी छिप कर बैठी है। उसे महसूस करो और बाबा को लिखकर दो तो सफाई हो। ईमानदारी का गुण भगवान का बनने में बहुत मदद करता है। खुद से आनेस्ट, भगवान से आनेस्ट - इसकी गहराई में जाओ। जितना आनेस्ट रहेंगे उतना सुखी रहेंगे।

प्लेटिनम जुबली वर्ष

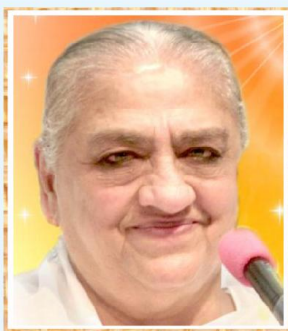
ईश्वरीय उपहार - ब. कु. गंगाधर

बनने का इशारा है। स्वयं को अव्यक्त बनाने के लिए जिन बातों पर विशेष ध्यान देना है, उनकी संक्षिप्त व्याख्या हम यहां पर कर रहे हैं -

व्यक्त भाव से मुक्त हो जाएं - युग-युग से व्यक्त संसार व व्यक्त व्यक्तियों के मध्य रहने के कारण व्यक्त भाव हमारे जीवन का बड़ा स्वाभाविक अंग बन चुका है। हमने दूसरों के लिए अलग-अलग भाव धारण कर लिए हैं। फलस्वरूप दूसरों के लिए हमारे मन में भिन्न-भिन्न भावनाएं पैदा हो गईं। कहीं-कहीं हमारी भावनाएं काफी दूषित व कहीं-कहीं काफी विकृत हो गई हैं। जैसी हमारी भावनाएं, वैसा ही दूसरों की ओर से व्यवहार होता है। क्योंकि भावनाएं श्रेष्ठ नहीं रहीं, इसलिए पारस्परिक सम्बन्धों में कड़वाहट की दुर्गन्ध यत्र-तत्र-सर्वत्र देखने को मिलती है। ईर्ष्या-द्वेष के भाव, घृणा-नफरत के भाव, द्वैत भाव या भेद-भाव, काले-गोरे के भाव, जाति-पाति के भाव, ऊंच-नीच के भाव, गरीब-अमीर के भाव, तेरे-मेरे के भाव- इन भावों के कारण भावनाओं में भेद है। भाव और भावनाओं को ही हम दृष्टि व दृष्टिकोण भी कह सकते हैं। गलत भाव के कारण उल्टी भावनाएं, असहयोग व बदले की भावना निर्मित होती है। हमारी बुरी भावनाएं सर्वप्रथम हमें ही कष्ट देती है और फिर व्यवहार बिगाड़ती है। ज्ञान-योग के पथ पर चलने वालों को ये विभिन्न भावनाएं बदलकर एक आत्मिक भाव धारण करना है। आत्मिक भाव होने से अपनेपन का भाव बढ़ता है, फलतः शुभ भावनाओं के बीज अंकुरित होते हैं। अच्छे हों या बुरे, हिन्दू हों या मुसलमान - सभी आत्माएं होने के कारण हमारे हैं। इस भाव से शुभ भावनाएं बढ़ती है और तब ही उन्हें भी हमसे अपनेपन का एहसास होगा और नफरत व घृणा का प्रदूषण स्वच्छ होगा। आज के पारस्परिक घृणा के माहौल में इस 'भाव' को धारण करने का अत्यधिक महत्व है।

आत्मिक भाव अर्थात् आत्मिक दृष्टि - इस वर्ष में व्यक्त दृष्टि से स्वयं को मुक्त करें। व्यक्त के आकर्षण से स्वयं को ऊपर ले चलें। ये पतित व्यक्त देह जो मन को आकर्षित करती है, इसे देखते हुए भी न देखें। इस देह रूपी घर में छुपी हुई मणि को देखने से व्यक्त का आकर्षण समाप्त हो जायेगा।

शुभ भावनाओं से मन को भरें - जो राजयोगी स्वयं के भण्डार शुभ भावनाओं से भर लेंगे, वे ही आने वाले समय में महादानी बन सकेंगे। जिस राजऋषि ने उन्हें भी शुभ भावनाएं देना सीख लिया जो ग्लानि करते हैं, जिस -शेष भाग 4 पर



दादी इदयमोहिनी, अति. मुख्य प्रशासिका

श्रीमत् पर चल सेवा के या स्व की श्रेष्ठ जीवन बनाने के निमित्त हैं। हमारे योग का नाम ही है सहज राजयोग। सहज क्यों है? क्योंकि योग उससे लगता है जिससे दिल का प्यार हो और प्यार तब होता है जब कोई प्राप्ति हो। बिना प्राप्ति के प्यार नहीं होता। हमारी याद सहज इसीलिए हैं कि हमारे सब सम्बन्ध एक बाबा से है और सम्बन्ध का आधार प्राप्ति है। जितना सम्बन्ध गहरे हैं, सम्बन्धों की अनुभूति है तो याद मुश्किल नहीं हो सकती है। तो पहले हमें अपने आपको चेक करना है कि हमारे सर्व सम्बन्ध एक बाबा से हैं! जिस समय कोई समस्या आती है उस समय उस रूप से बाबा को देकर के अपने दिल को खाली कर सकते हैं। कई गोपिकाएं ऐसी हैं जो अपना अनुभव सुनाती हैं कि हमारा बाबा से इतना गहरा सम्बन्ध है जो हमारे पास कोई बात आती है तो फौरन हम बाबा के आगे अपना दिल खोल देते हैं। उन्हें बताने के बाद हमारा दिल हल्का हो जाता है। बाबा को कोई भी बात देने से हम उस समस्या से छूट जाते हैं। तो हमारा कनेक्शन बाबा से इतना गहरा हो, हम बाबा को अपने दिल की बात देकर बाबा से शक्ति ले लेवें। तो ये जरूर चेक करना चाहिए - एक सर्व सम्बन्ध और दूसरा सर्व प्राप्ति। प्राप्ति ऐसी चीज है जो कोई कितना भी कहे इसको भूल जाओ, नहीं भूल सकते। प्राप्ति याद बार-बार दिलाती है। तो बाबा से जो हमें प्राप्ति हुई है उनमें दो बातें याद रखो - बाबा ने क्या बनाया है और क्या दिया है। उसकी लम्बी लिस्ट है, स्वमान क्या-क्या दिया है। हम क्या थे और क्या बन गये हैं। जो हम कहते हैं - बाबा ही हमारा संसार है या

आत्मा इस शरीर की मालिक है

कहते हैं बाबा कम्बाइन्ड है। अगर बाबा हमसे कम्बाइन्ड है तो हमारी हर समस्या का समाधान भी कर सकता है, सुन भी सकता है, सुना भी सकता है, इशारा भी दे सकता है। इसी रीति से अगर हम अपने योग को चेक करें, तो हमारा योग सहज भी है और शक्तिशाली तो है ही क्योंकि है ही सर्वशक्तिमान बाबा के साथ। हम जो भी यहाँ बैठे हैं उन्हीं के ऊपर बाबा ने जिम्मेवारी दी है। अगर बाबा सेवा का यह पार्ट नहीं देता तो हमारी स्टेज क्या बनती। बिजी रहना जरूरी है। सेवा में हम बिजी नहीं रहें तो भी हमारी स्थिति जो बननी चाहिए वो नहीं बन सकती। कर्म तो हमको करना ही है, हमारा है ही कर्मयोग। सेवा तो करनी ही है, सेवा के संकल्प भी चलते हैं, प्राप्ति हुई, नहीं हुई वो भी अनुभव होते रहते हैं। लेकिन जैसे कोई डायरेक्टर है अपनी सीट पर बैठा है, और अनेक कर्मचारी काम कर रहे हैं, वो डायरेक्शन दे रहा है। लेकिन डायरेक्शन देते हुए उसे ये स्मृति रहती है कि मैं डायरेक्टर हूँ। उसे ये भूलता नहीं है कि मैं डायरेक्टर हूँ। तो हम जब सेवा करते हैं चाहे स्थूल करते हैं, चाहे आत्माओं की करते हैं तो क्या हम ये नहीं समझ सकते हैं कि मैं आत्मा अपनी स्मृति की सीट पर इन कर्मन्द्रियों की करावनहार हूँ। मैं मालिक हूँ और ये मेरे कर्मचारी हैं। अशरीरी बनने का मतलब है कि मैं आत्मा अलग मालिक हूँ और कर्मन्द्रियों मेरे से अलग हैं, वो करनहार है और आत्मा मालिक करावनहार है। तो जैसे ब्रह्मा बाबा ने मालिक बनकर दरबार लगाई, ऐसे रोज दरबार लगाओ तब कर्म और योग दोनों का बैलेन्स रह सकता है। आत्म-अभिमान बनकर हम सेवा कर सकते हैं। लेकिन ये स्मृति मेरे को बीच-बीच में अपने को दिलानी पड़ेगी और चेक करना होगा कि कर्मचारी और करावनहार मिक्स तो नहीं हो गये।